एस॰ एस॰ कॉलेज जहानाबाद।
विभाग - हिन्दी
विषय - 'चन्द्रगुप्त' नाटक
वर्ग - स्नातक प्रतिष्ठा भाग 1
शिक्षण माध्यम - वाट्स-एप
समय - 11 बजे से 12 बजे तक - 12.8.2020
शिक्षक - डॉ. रमेश शर्मा
पाठ - अभिनेयता

प्रिय छात्र-छात्राओं!

अबतक हमलोगों ने 'चन्द्रगुप्त' नाटक के समस्त अंगों पर विचार कर लिया है। कथानक पर विचार करते हुए अभिनेयता पर भी चर्चा हुई थी पर इस विषय पर स्वतंत्र रूप से विचार करने की आवश्यकता है। अभिनेयता की दृष्टि से विचार करने पर प्रसाद के अधिकांश नाटकों की सफलता पर प्रश्न-चिह्न लगा हुआ है। घटना-विस्तार, दृश्यों की बहुलता, लम्बे-लम्बे दार्शनिक संवाद, भाषा की क्लिष्टता, स्वगत कथन, गीत-योजना आदि के कारण आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित मंचों पर भी उन्हें उतारना कठिन हो जाता है। उपयुक्त निर्देशक मिलने पर भी योग्य अभिनेता मिल पाना कठिन हो जाता है जो लम्बे-लम्बे दार्शनिक संवादों का अभिनय के साथ वाचन कर सके। मान लिया जाय कि आज के योग्य किसी (फिल्मी) अभिनेता मिल भी जाँय तो दर्शकों तक उन संवादों को पहुँचाना अर्थात् उनके मानस में उतार देना असंभव असंभव ही है, क्योंकि योग्य दर्शक कहाँ से लायेंगे?

यहाँ तो अपढ़ दर्शक भी रह सकते हैं। अब जयशंकर प्रसाद जी के अनुसार योग्य दर्शक कहाँ से लाया जायेगा। तब तो नाटक की आत्मा (दृश्य-काव्य वाली) ही मर जायेगी। नाटक दृश्य-काव्य है तो सबों के लिए है। अपने हिन्दी नाटक में डॉ. बच्चन सिंह जी ने सवाल उठाते हुए लिखा है —

" प्रसाद के नाटकों को अमंचोपयुक्त करार देने के पहले उन्हें ~~खेलने की~~ कितनी बार खेलने की कोशिश की गई? संस्कृत, अंग्रेजी, फ्रांसीसी नाटकों को मंचों पर बार-बार उतारा गया। किन्तु प्रसाद के नाटकों पर किसी निर्देशक ने कृपा नहीं की। उनके नाटकों के मंचीय संस्करण के आधार पर कुछ फतवा दिया जाता तो उसका कुछ अर्थ होता। प्रसाद के नाटकों का साहित्यिक मूल्य असंदिग्ध हो चुका है। यदि मंच पर ये खरे नहीं उतरते तो रंगमंच की खराबी हो या फिर यह स्वीकारना होगा कि नाटक और मंच का अनिवार्य संबंध नहीं है।"

(पृष्ठ - 75)

उपर्युक्त विश्लेषण मेरे गले नहीं उतरता। यह आलोचना सम्यक् नहीं कहा जा सकता कि प्रसाद जी के नाटकों का साहित्यिक अवदान के कारण नाटक और रंगमंच पर ही सवाल उठा दिया जाय कि दोनों का अनिवार्य संबंध नहीं है। यह तो नाटककार प्रसाद पर विशेष कृपा दिखाने जैसा है। शेष अगली कड़ी में।

[illegible signature]
12.8.20